।। श्रीदादूदर्शन ।।

ब्रह्मर्षि संत श्री स्वामी दादूजी महाराज का अवतरण

डॉ. दयाराम स्वामी
एम.बी.बी.एस. एम.डी. (स्वर्णपदक)
वरिष्ठ मानसिक रोग विशेषज्ञ एवं पूर्व प्रमुख विशेषज्ञ
एस.एम.एस. हॉस्पिटल, जयपुर

दादूजी के जन्म तथा जाति के बारे में इस समय तक जो कुछ विभिन्न लेखकों द्वारा लिखा गया है, वह एक दूसरे से पर्याप्त भिन्नता रखता है। इसका प्रधान कारण है - लेखकों की अति न्यून जानकारी । इस बारे में सबसे पहिले जो कुछ लिखा गया है, वह अंग्रेज लेखकों द्वारा लिखित है। उनकी जानकारी में सबसे पहली कठिनाई भी भाषा की तथा दूसरी कठिनाई थी उस विषय को जानने की । अंग्रेज जाति के होने से अपने देश के व्यक्तियों के साथ उनका घनिष्ठ परिचय नहीं हो सका। फिर सामग्री जिनके पास मिल सकती थी उन तक वे पहुँचे भी नहीं । इससे उनको जो कुछ थोड़ी बहुत जानकारी किन्हीं सुने सुनाये व्यक्तियों से प्राप्त हुई, उसी के आधार पर उन्होंने इस विषय पर अपना मत प्रकट किया। अतः वह सर्वथा ठीक कैसे हो सकता था? अंग्रेज लेखकों के लेख में यह कमी सभी में हैं। क्योंकि पीछे लिखने वालों ने पहले लिखने वालों का आश्रय लिया। इस तरह डाक्टर विल्सन, ब्यूल्हर, टयोसी, ग्रियर्सन, जी.आर. सिडन्स, क्रुक आदि का विवेचन भ्रांतिरहित नहीं है। अंग्रेजी के बाद हिन्दी लेखकों का नम्बर है। उनमें भी अनुसंधान की कमी के कारण वैसे ही दोष आ गये हैं, जैसे अंग्रेजी लेखकों में है। अनुसंधान से लिखने वालों में तीन व्यक्ति शेष रह जाते हैं :- डाक्टर ताराचंद गोयल, राय साहब चन्द्रिका प्रसाद जी त्रिपाठी, आचार्य क्षितिमोहन सेन । इन तीनों में राय साहब का वही मत है जो सम्प्रदाय में अब तक परम्परा से चला आ रहा है।

आचार्य सेन तथा गोयल महोदय का मत इससे भिन्न है।

आविर्भाव – भारतवर्ष में सत्रहवी शताब्दी के पूर्व जब मुगल साम्राज्य था। तथा बादशाह अकबर का काल था। धर्म के नाम पर हिन्दु एवं मुसलमान परस्पर विरोधी थे। अकबर की नीति हिन्दू व मुस्लिम धर्म को समीप लाने की थी। वह काल दो धर्म तथा संस्कृतियों का सन्धिकाल भी कहा जाता है । उसी काल में महान् विचारक, परमसाधक महात्मा दादू ने लोक कल्याण हेतु अवतार ग्रहण किया । प्रभु आज्ञा से सनक ऋषि ही भारत भूमि की पवित्र धरा पर दादू जी के रूप में अवतरित हुए।

अवतरण स्थान व घर में आवास - श्री दादू जी का अवतरण स्थान अहमदाबाद माना गया है। सम्वत् 1601 फाल्गुन शुक्ला अष्टमी को साबरमती नदी में कमल दल में प्रवाहित होते हुए प्रातः काल नागर ब्राह्मण लोदीराम जी को प्रभु आज्ञा से प्राप्त हुए थे।

लोदीराम जी निःसन्तान थे। तथा प्रतिदिन प्रभु से पुत्र प्राप्ति की याचना करते थे। उन्होंने एवं उनकी धर्मपरायण पत्नी ने अतीव चाव व दुलार से दादू जी का पालनपोषण किया। ग्यारह वर्ष की आयु में एक दिन संध्या समय कांकरिया तालाब पर बालक दादूजी अन्य बालकों के संग खेल रहे थे। तभी परमात्मा वृद्धरूप धारण कर पधारे। कहा जाता है, ''और भयभीत हो भाग गये तब दादू जी दौड़ नजदीक ही आये''।

दादू जी ने वृद्ध भगवान को नमन कर एक पैसा भेंट स्वरूप अर्पित किया । वृद्ध भगवान ने आज्ञा फरमाई की जो वस्तु सर्वप्रथम मिले ले आओ। दादू जी को सर्वप्रथम एक पान की दुकान मिली। अतः दादूजी एक पैसे का पान लेकर आये तथा वृद्ध भगवान् (बूड़ण भगवान्) को अर्पित किया। वृद्ध भगवान ने दादू जी को उपदेश दिया तथा जगत्कल्याण के लक्ष्य को याद दिलाया, जिस हेतु परमात्मा द्वारा दादू जी का अवतरण हुआ। दादू जी गृह त्याग कर आत्म चिंतन हेतु चल पड़े।

साधना - अहमदाबाद से चल कर आबू होते हुए पुष्कर के नाग पहाड़ की श्रृंखला में एक पहाड़ी जो कल्याणपुर वर्तमान के करड़ाला ग्राम जो कि जिला नागौर राजस्थान में स्थित है। दादूजी इस ग्राम की पहाड़ी स्थित एक ककेड़े के पेड़ के नीचे साधना करने लगे। छः वर्ष तक कठोर साधना द्वारा आत्मानुभव किया।

सैद्धान्तिक संघर्ष – आत्मानुभूति के पश्चात् वे सांभर नगर पधारे। यहाँ से उन्होंने अपनी अनुभूति के अनुसार उपदेश देना प्रारम्भ कर दिया। दादूजी प्राणीमात्र में प्रेम सत्य, अहिंसा, निर्वैरिता व दया भाव मानव की स्वाभाविक प्रवृत्ति मानते थे। अतः कालान्तर में ''दादूदयाल'' नाम से प्रसिद्ध हुए। उनका यह दृढ निश्चय था, कि ईश्वरीय सृष्टि में जाति धर्म के भेदभाव को, ऊंच, नीच व स्पृश्यास्पृश्य को कोई स्थान नहीं है। वे राम व रहीम को एक ही मानते थे। दादूजी निर्गुण भक्तिधारा के उपासक थे।

उनके इन विचारों का कुछ समय तक हिन्दू तथा मुसलमान दोनों ने ही विरोध किया तथा उन्हें कई तरह के कष्ट पहुँचाये, पर उनके धैर्य तथा समत्वभावना का धीरे धीरे उभय पक्षों व जनमानस पर प्रभाव होने लगा तथा दोनों ही धर्मानुयायी श्रीदादूजी में श्रद्धा रखने लगे । साँभर में चौदह वर्ष के काल में आपके अनेकों शिष्य बने।

बीकानेर राजपरिवार के भीमराज जी जो बड़े सुन्दर दास जी के नाम से विख्यात हुए । तथा दादूपंथी नागा सम्प्रदाय के प्रथम पुरुष माने जाते हैं । आप साँभर में ही सर्वप्रथम दादूजी महाराज के शिष्य बने ।

आमेर निवास – सम्वत् 1632 से 1644 (12 वर्ष) तक दादूजी ने आमेर में निवास किया। जिस गुफा में वे साधना करते थे, वह आज भी आमेर के श्रीदादू मंदिर के नीचे सूरक्षित व संरक्षित है।

आमेर में राजा मानसिंह के पिता महाराजा भगवन्दास राज्य करते थे। वे दादूजी के परम श्रद्धावान भक्त थे। आमेरनिवास के समय दादू जी की कीर्ति दूर दूर तक फैली। सीकरी में बादशाह अकबर ने भी उनकी प्रशंसा सुनी। बादशाह अकबर ने महाराजा भगवन्त दास जी से दादूजी को सीकरी लाने का आग्रह कर दर्शन करने की इच्छा प्रकट की। अकबर दादू जी के विचारों से बहुत प्रभावित हुए और अकबर ने दादूजी के उपदेश के प्रभाव से ही ''गौहत्या'' बन्द कर दी । अकबर ने दादूजी के विषय में कहा :-

दादू नूर अल्लाह है, दादू नूर खुदाय।
दादू मेरा पीव है, कहे अकबर शाह ।।

भ्रमण - सीकरी से लौट कर दादूजी ने मौलिक विचारो के प्रचार के लिए विभिन्न क्षेत्रों का भ्रमण किया । तथा निश्चयात्मक विचारों से जनमानस को प्रभावित किया। भ्रमणकाल में तीन वर्ष पुनः अपने पहले साधनास्थल ग्राम करडाला में रहे। तत्पश्चात् साँभर में नरायणा के प्रशासक खंगारोत उन्हें नरायणा ले आये। सम्वत् 1657 से 1660 तक वे नरायणा में विराजमान रहे। आपकी सरस, अमृतमयी वाणी का ऐसा प्रभाव पड़ता था, कि सैकड़ों की संख्या में उच्चकोटि के विचारक आपके शिष्य बने।

दादूजी ने अपने विचारों को साखी और शब्दों में भी गुम्फित किया। उनकी इस रचना की संज्ञा 'श्री दादू वाणी' जी है। इसमें 37 प्रकरण साखी भाग के हैं। पदभाग में 27 राग , रागनियों में 445 पद है।

आत्मचिन्तन की प्रवृत्ति वाले साधकों को वाणी के पठन-पाठन से परम शांति का अनुभव होता है । दादजी ने वर्गभेद के बिना हिन्दू व मुसलमान दोनों को ही अपना शिष्य बनाया। उनके मुसलमान शिष्यों में रज्जब जी, बखना जी, वाजिदजी, नागर व निजामजी का नाम उल्लेखनीय हैं। हिन्दू शिष्यों में गरीबदास जी, मस्कीनदासजी, बड़े सुन्दरदास जी, छोटे सुन्दरदासजी, पं. जगजीवन जी, टीला जी इत्यादि इस प्रकार प्रसिद्ध बावन शिष्य हुए।

निर्वाण - दादूजी ने अपनी विचारधारा से मानवमात्र की धर्म, जाति भेद, रागद्वेष की संतापाग्न से बचाने में पर्याप्त प्रयास किया तथा उनका प्रयास बहुत अंशों तक सफल रहा। वे उच्च कोटि के साधक थे। उन्होंने ज्ञान भक्ति व वैराग्य की मौलिक धारा का प्रचार कर निर्गुण संत परम्परा में अपना अग्रणी स्थान बनाया और संवत 1660 ज्येष्ठ कृष्णाअष्टमी को ब्रह्मलीन हो गये। दादूजी महाराज की देह को भैराणा धाम लाया गया, दाहसंस्कार पर विचार विमर्श चल ही रहा था। तभी श्री दादू जी महाराज की देह अन्तर्ध्यान हो गई, तथा ''सत्यराम'' कहते हुए, भैराणा पर्वत की गुफा में समाहित हो गई।

जनश्रुति है, कि ''दादू और कबीर की काया भई कपूर''।

इस प्रकार सगुण देह निर्गुण में समाहित हो गई।

उपदेश – दादजी ने अपनी साधना में समत्व योग को सिद्ध किया था। शुद्ध चैतन्य ही उनका उपास्य देव था। आत्म निरीक्षण द्वारा ही उन्हें आत्मानुभूति की प्राप्ति हुई थी। आत्मधर्म व आत्म संबंध के सिवाय और बाते उनकी दृष्टि में गौण थी। दाटूजी ने इसीलिये धर्म की ऊपरी तह-लोकाचार को महत्व नहीं दिया। उन्होंने उस सत्य, शाश्वत धर्म को ही धर्म माना। उसी का उपदेश आरम्भ किया। जाति, वर्ण और धर्म का केवल औपचारिक भाग जिससे भेदभाव की वृद्धि के सिवाय और कोई फल नहीं निकलता, बचने की सिफारिश की। कल्पित जाति, वर्ण व धर्म विशेष की अनुपादेयता बतानी प्रारम्भ की। दादूजी की इस उपदेशसरणि का मुख्य हेतु आत्मानुभूति तो था ही, साथ ही उन पर कुछ प्रभाव समय व परिस्थिति का भी पड़ा था।

दादूजी और कबीर जी की विचारधारा और सिद्धान्तों में अतिशय साम्य दिखाई देता है। कबीर की तरह निर्गुण ब्रह्म ही दादूजी के उपास्य हैं। बाह्याडम्बर का परित्याग, हृत्प्रदेश में उपास्य की उपासना, जाति पांति के भेद का परित्याग कर सबमें एकात्मदर्शन आदि कबीर के सिद्धान्तों का दादू जी ने भी पूर्णतया अनुमोदन किया। कबीर जी का समर्थन करते हुए दादूजी कहते हैं :-

जे था कन्त कबीर का सोई वर वरिहूँ।
मनसा वाचा कर्मा मैं औरन करिहूँ।।

सांचा शब्द कबीर का मीठा लागे मोहि।
दादू सुनता परम सुख केता आनंद होई।।

संत श्री दादूजी ने नामजप की महिमा अपनी अमृतवाणी में बतायी है। साधक वर्ग को सर्वप्रथम मन के स्थैर्य के लिए नामजप का आश्रय लेना पड़ता है। जप के लिए अनेक मंत्र साधना के लिए निर्दिष्ट हैं। इन्हीं मंत्रों में 'रामनाम मंत्र' को अग्रणी माना गया है। दादू जी ने अपनी वाणी में 'सुमरण के अंग' में रामनाम जप की अतीव महत्ता प्रदर्शित की है। वे कहते हैं :-

दुख दरिया संसार है, सुख का सागर राम।
सुख सागर चल जाइये, दादू तजि बे काम।।

मेरे संसा को नहीं, जीव मरण को राम।
सुपने ही जिन वीसरे, मुख हिरदे हरिनाम।।

दादू राम नाम निज औषधि, काटै कोटि विकार ।
विषम व्याधि ते उबरे, काया कंचन सार ।।

दादू सब ही वेद पुरान पढ़ि, नेड नाव निरधार ।
सब कुछ इनहि मांहि है, क्या करिये विस्तार।।

दादू अलिफ एक अल्लाह का, ने पढ़ जाणै कोय।
कुरान कतेबा इल्म सब, पढ़ि कर पाकी होय ।।

हिरदै राम रहे जा जन के, ताको ऊरा कौण कहै ।
अठ सिद्धि नौ निधि ताके, आगे सनमुख सदा रहै।।

वंदत तीनों लोक बापुरा, कैसे दरस लहै ।
नाँव निसान सकल जग, ऊपर दादू देखत है ।

नाम जप पर दादू जी को कितनी निष्ठा थी। यह उपर्युक्त साखियों से स्पष्ट है।

निर्गुणोपासक को निर्गुण में मन पहुंचाने के लिए मनःस्थैर्य की अपेक्षा है । और वह मनःस्थैर्य बिना किसी अवलम्बन के हो नहीं सकता। मन की स्थिरता के लिये तो किसी न किसी उपास्य के स्मरण की आवश्यकता रहती है। जैसा कि दादूजी ने स्वयं मन के अंग में कहा है :-

बिन अवलम्बन क्यौं रहै, मन चंचल चलि जाइ।
स्थिर मनवा तत्ब ही रहैं, सुमिरन सेती लाइ ।

सुमिरन निर्गुणोपासना में निर्गुण के वाचक नाम के रटने के अतिरिक्त नहीं होता। वह नाम चाहे ओंकार हो या राम हो या कुछ भी हो या और कोई हो। जैसा कि निम्न साखियों में कहा गया है :-

दादू नीका राम है ,तीन लोक तत सार ।
रात दिवस रटबो करै, रे मन इहै विचार ।।

दादू सिरजनहार के, केते नाम अनन्त
चित आवै सौ लीजिये, यों साधु सुमिरै सन्त ।।

इस प्रकार संत श्री दादू जी का नाम जप पर बहुत जोर था क्योंकि नाम सुमिरन द्वारा सहज ही भगवत प्राप्ति संभव है। यह प्रभु प्राप्ति का सीधा एवं सरल माध्यम है।

।। सत्य राम ।।